Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H.D Jain College, Ara
M.A semester - 1 Philosophy CC-01
Indian Epistemology & Logic

1

"Definition, Nature of Cognition"

2020 APRIL

FRIDAY 24

ज्ञान एक ऐसा प्रत्यय है जिसकी यत्किंचित व्याख्या संभव है किन्तु परिभाषा नहीं। इस परम्परा में लौकिक ज्ञान ही ज्ञानमीमांसीय विवेचना का विषय-वस्तु है। व्यावहारिक ज्ञान को त्रिपुटी ज्ञान के रूप में समझा जा सकता है। यह "त्रिपुटी ज्ञान" यथार्थ अथवा अयथार्थ हो सकता है। यथार्थ ज्ञान को प्रमा तथा अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहा गया है।

भारतीय ज्ञानमीमांसा 'तत्वमीमांसा का साधन' है अतएव प्रत्येक भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय के अपनी तत्वमीमांसा से अविच्छिन्न होने के कारण भारतीय दार्शनिक ज्ञान का विश्लेषण तत्वमीमांसा से परे मात्र एक मापाची क्रम के रूप में नहीं करते। अतएव यहाँ सामान्यतः 'ज्ञान' को 'विषय के प्रकाशक' के रूप में ही स्वीकार किया गया है। शब्दान्तर में ज्ञान के विषय में भारतीय दार्शनिकों की एक सामान्य धारणा यह है कि 'ज्ञान वह है जो विषय को प्रकाशित करता है।' विषय की यह प्रकाशना ज्ञाता की चेतना में होती है। इसी अर्थ में कहा गया कि विषय जिस रूप में ज्ञाता की चेतना में उपस्थित होता है, विषय का वह रूप, विषय की उपस्थिति की वह क्रिया और स्वयं ज्ञाता ही त्रिपुटी 'ज्ञान' अथवा 'बोध' की संरचना करते हैं।

2

APRIL

25 SATURDAY

इसी रूप में, यहाँ 'त्रिपुटि ज्ञान' अर्थात ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान का साधन अथवा 'प्रमाण' अथवा स्वतंत्र ज्ञान के स्वाभाविक रूप 'ज्ञान' की धारणा का जन्म होता है।

इस त्रिपुटि ज्ञान के विषय में भी यथार्थवादियों तथा प्रत्ययवादियों में मतभेद है। यथार्थवादी ज्ञान के इन तीन संघटक तत्वों - ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान अथवा प्रमाण को परस्पर एक दूसरे से स्वतंत्र मानते हैं जबकि प्रत्ययवादी ज्ञान के इन तीन संघटक तत्वों के बीच के भेद को पारमार्थिक अथवा चरम स्वीकार नहीं करते। प्रत्ययवादी मत के अनुसार यदि ज्ञाता, ज्ञेय और प्रमाण को परस्पर स्वतंत्र मानें तो इससे बाह्य संबंधवाद की समस्या उत्पन्न होगी जिससे अनन्तता दोष उत्पन्न होगा। अतः प्रत्ययवादी, त्रिपुटि ज्ञान को व्यावहारिक दृष्टि से स्वीकार करते हैं पर भी पारमार्थिक रूप से इसे अस्वीकार करते हैं।

ज्ञान के विषय का प्रकाशन यथार्थ भी हो सकता है और अयथार्थ भी। जैसे जब वस्तु रज्जु का ज्ञान ज्ञाता को रज्जु रूप में होता है तो विषय का यह प्रकाशन यथार्थ है। जब वस्तु रज्जु का ज्ञान ज्ञाता को सर्प के रूप में होता है तो विषय का यह प्रकाशन अयथार्थ है। इस रूप में ज्ञान यथार्थ और अयथार्थ दोनों ही हो सकता है।

26 SUNDAY

भारतीय परम्परा में

यथार्थ और अयथार्थ ज्ञान के इस भेद को स्वीकार करते हुए यथार्थ ज्ञान को 'प्रमा' और अयथार्थ ज्ञान को 'अप्रमा' की संज्ञा दी गई है। विभिन्न भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों में प्रमा अप्रमा के भेद को निरूपित करने के लिए विस्तृत विवेचनाएँ की गयी हैं।

ज्ञान के संदर्भ में प्रश्न यह उठता है कि ज्ञान किस कोटि की सत्ता है। भारतीय परम्परा में ज्ञान की व्याख्या चार रूपों में की गई है ——

1. ज्ञान द्रव्य है।
2. ज्ञान गुण है।
3. ज्ञान क्रिया है।
4. शून्यतावादी मत।

(1) ज्ञान द्रव्य है —— इस मत के समर्थक वेदान्ती और सांख्य हैं। इस मत के अनुसार 'आत्मा' अथवा 'पुरुष' ज्ञान स्वरूप है। ज्ञान को 'द्रव्य' कहने का अर्थ यह नहीं है कि ज्ञान आत्मा, पुरुष अथवा ब्रह्म से भिन्न कोई तत्व है वरन इस मत के अनुसार आत्मा, पुरुष अथवा ब्रह्म स्वयं ज्ञान स्वरूप ही है। तात्विक दृष्टि से ब्रह्म और ज्ञान में अभेद है। जो ब्रह्म है वही ज्ञान है जो ज्ञान है वही ब्रह्म है। यह ज्ञान सबको धारण करता है किन्तु उसका कोई भिन्न अधिष्ठान नहीं। यह ज्ञान सबको प्रकाशित करता है। इस दृष्टि से ज्ञान स्वतः प्रमाण्य और स्वतः प्रकाश्य है।

इस संदर्भ में योगाचार बौद्धों का मत उल्लेखनीय है जो ज्ञान का 'द्रव्य' रूप तो नहीं स्वीकार करते किन्तु योगाचार मत में भी विज्ञान अथवा विज्ञप्तिमात्र ही सत्य है और विज्ञान ही एकमात्र सत्ता है। योगाचार मत की सत्ता विषयक अवधारणा 'सत्ता' विषयक सामान्य अवधारणा से भिन्न है। योगाचार मत ज्ञान को गुण अथवा कर्म भी नहीं कहता।

(2.) ज्ञान गुण है — भारतीय दार्शनिकों का एक दूसरा वर्ग ज्ञान को 'गुण' के रूप में स्वीकार करता है। ज्ञान को 'गुण' कहनेवाले दार्शनिकों को भी दो वर्गों में रखा जा सकता है—

1. प्रथम वर्ग उन विद्वानों का है जो चेतना अथवा ज्ञान को द्रव्य का आगन्तुक लक्षण कहते हैं। तथा दूसरा वर्ग उन दार्शनिकों का है जो ज्ञान अथवा चेतना को द्रव्य का स्वरूप लक्षण कहते हैं। इनमें से प्रथम वर्ग में चार्वाक, न्याय, वैशेषिक तथा प्रभाकर मीमांसक आते हैं। तथा द्वितीय वर्ग में जैन तथा विशिष्टाद्वैत रामानुजाचार्य का सम्प्रदाय आता है।

चार्वाक एक भौतिकवादी मत है। इस मत के अनुसार चार भूतों से ही सभी वस्तुओं की

उत्पन्न हुई है। चेतना इन चार भूतों (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु) के संयोग का उपोत्पाद है। चार्वाक देहात्मवादी है। इस मत के अनुसार चेतना अथवा ज्ञान भौतिक शरीर का ही गुण है। यह गुण शरीर का स्वरूप लक्षण न होकर आगन्तुक लक्षण है। चार्वाक मत के अनुसार ज्ञान का उत्पन्न आदि शब्दों का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि ज्ञान कोई शाश्वत सत्ता नहीं वरन शरीर के विशेष अंग का एक आगन्तुक गुण है।

न्याय वैशेषिक मत आत्मा को पदार्थ के रूप में स्वीकार करते हैं। वैशेषिक मत में आत्मा द्रव्य है और ज्ञान इसका गुण। न्याय मत भी ज्ञान अथवा चेतना को पदार्थ रूपी आत्मा का गुण ही कहता है। किन्तु इस मत में ज्ञान अथवा चेतना को आत्मा का स्वरूप लक्षण न कहकर आगन्तुक गुण कहा गया है।

प्रभाकर मत में चैतन्य के अधिष्ठान के रूप में आत्मा को स्वीकार किया गया है। यह आत्मा स्वयं में चैतन्य स्वरूप नहीं है। जब विषय, इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि के साथ आत्मा का सम्पर्क होता है तभी आत्मा में ज्ञान अथवा चैतन्य रूपी गुण की उत्पत्ति होती है। सुषुप्ति, मूर्छा आदि की स्थितियों में चेतना का अभाव यह

स्पष्ट सिद्ध होता है कि चेतना आगन्तुक गुण
चेतना को आत्मा का आगन्तुक गुण न होकर
स्वाभाविक लक्षण है।

(14) सांख्य और
योग के अनुसार — [illegible] चैतन्य
आत्मा है, जो पुरुष कहलाता है और चेतना
उसका स्वरूप लक्षण है। दूसरे शब्द में
जीव तथा आत्मा या पुरुष को चेतनस्वरूप
माना जाता है, क्योंकि कहा गया है कि
चेतना जीव तत्त्व का स्वरूप लक्षण
है। सांख्य [illegible] बुद्धि, मन और अहंकार
ये तीनों प्रकृति के तीन तत्त्वों का
परिणाम मानता है। [illegible] अहंकार, अथवा
[illegible] [illegible] तथा जीव एवं
प्रकृति [illegible] है। चेतना इसी जीव
तत्त्व का स्वरूप लक्षण है।

(15) ज्ञान क्रिया है — यह
मत है सनातन और मीमांसक है। भाट्ट
मीमांसा के अनुसार ज्ञान न तो द्रव्य
है न तो गुण है। इस मत के
अनुसार ज्ञान क्रिया है जिसका कर्ता
आत्मा है। [illegible] जानाता है और
[illegible] है कि ज्ञान क्रिया है
[illegible] ने ज्ञान को आत्मा का
धर्म भी माना है किन्तु यहाँ 'धर्म'
पद का प्रयोग 'गुण' के अर्थ में
न होकर 'क्रिया' के अर्थ में ही
हुआ है। प्रो. रामजी मिश्र ने ज्ञान
को [illegible] क्रिया कहा है।

ज्ञान का विषय ही ज्ञान का कर्म है जैसे मैं पुस्तक को जानता हूँ, यहाँ पर 'कर्ता' है, 'पुस्तक', कर्म तथा 'ज्ञान' क्रिया है।

(5.) शून्यतावादी मत– ज्ञान के विषय में शून्यतावादी बौद्धों का मत सर्वथा विलक्षण है। इनके अनुसार ज्ञान न तो द्रव्य है, न गुण है, न क्रिया है वरन यह शून्यता है।

शून्यतावादी बौद्धों की शून्यता विषयक अवधारणा एक विलक्षण अवधारणा है, यहाँ शून्यता का अर्थ 'अभाव' नहीं है किन्तु शून्यता को 'भाव' के अर्थों में भी व्याख्या नहीं किया जा सकता। 'शून्यता' वस्तुतः 'अनभिलाप्य' (वाणी से परे) है। अतः इसकी भावमूलक व्याख्या संभव नहीं। व्यवहार की दृष्टि से बौद्ध शून्यता की निषेधात्मक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि से शून्यता-रूप ज्ञान द्रव्य गुण कर्म संबंध आदि से परे (निषेधरूप) है।

भारतीय परम्परा में त्रिपुटिज्ञान की अवधारणा पाई जाती है। प्रमा चूँकि एक प्रकार का ज्ञान है अतएव यहाँ प्रमा का स्वरूप निरूपण भी त्रिपुटिज्ञान के रूप में किया गया है। त्रिपुटिज्ञान के रूप में प्रमा के तीन संघटक तत्व हैं– प्रमाता अर्थात प्रमा को प्राप्त करनेवाला प्रमेय अर्थात प्रमा की विषय-वस्तु और प्रमाण अर्थात

APRIL '20						
M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

MAY '20						
M	T	W	T	F	S	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

APPOINTMENTS / MEETINGS

8 AM प्रमा का साधन, प्रमा के साधन को प्रमाण कहा गया है। प्रमाणयुक्त प्रत्येक ज्ञान प्रमा है। इस प्रकार त्रिपुटि ज्ञान के रूप में प्रमा के तीन ~~[illegible]~~ संघटक तत्व है — प्रमाता, प्रमेय और प्रमाण अथवा स्वयं प्रमा।

9

10

11

12

1 PM

2

3

3 SUNDAY